Environmental Protection and Social Work Profession

(Proceeding With Full Paper)

Editors

Dr Bijendr Pradhan
Mr Ankit Sharma
Dr Pushpa Mishra
Dr Vikas Sharma

Environmental Protection and Social Work Profession

[Edited Book]

ISBN: 978-93-83634-45-3

© Editing Teem -2019

Editors: Dr. Bijendr Pradhan, Dr. Pushpa Mishra

Mr. Ankit Sharma, Dr. Vikas Sharma

Co-editors: Mr. Ranjit Kumar Jaiswal Mr. Indra Ram Poonia

First Edition: March, 2019

Price: 350/-

Published by: Department of Social Work
Jain Vishva Bharati Institute,
Ladnun-341306 (Rajasthan)

Printed by:

No part of this book may be reproduced or transmitted any form or by any m
electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any inform
storage and retrieval system, without permission in writing from the publishers

Cover Page Photo Credits:
https://www.instagram.com/p/BtTV1koHYVX/?utm_source=ig_share_sheet&
d=1svv9176cp9a

पर्यावरण संरक्षण और अहिंसा

डॉ. हेमलता जोशी
सहायक आचार्य
योग एवं जीवन विज्ञान विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

प्रकृति परमात्मा की एक सुन्दर कृति है। इसमें सजीव तथा निर्जीव दोनों ही चीजें सम्मिलित हैं। यदि इस प्रकृति के साथ सकारात्मक रवैया अपनाया जाए, मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किया जाए तो प्रकृति अपनी सुन्दरता को, अपनी सुरम्यता को यों ही बनाए रखेगी जिसका सीधा प्रभाव मानव पर ही नहीं वरन् अन्य प्राणी समुदाय पर भी पड़ेगा। यह स्वस्थ एवं सुखी रहने के लिए आवश्यक ही नहीं वरन् अपरिहार्य भी है। अतः मानव का यह कर्तव्य है कि वह इसके लिए जागरूक रहे। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक की यात्रा में अनेक दार्शनिक, समाजशास्त्री, बुद्धिजीवी, शिक्षाशास्त्री, पर्यावरणविद एवं वैज्ञानिक आदि अपना सक्रिय योगदान देते रहे हैं। हमारे धर्मग्रंथों में प्रकृति संरक्षण हेतु प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कई उपाय निर्दिष्ट हैं। वैदिक परम्परा हो अथवा जैन परम्परा, बौद्ध परम्परा हो या अन्य परम्परा, सभी में प्रकृति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अवश्य ही दृष्टिगोचर होता है। समय-समय पर अनेक मनस्वी से भी सोचा किया जाता है। इससे स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि वास्तव में प्रकृति जो कि हमारा पर्यावरण है, उसका स्वस्थ रहना हमारे लिए अति आवश्यक है। अतः आवश्यक है कि प्रकृति संरक्षण के उपायों को व्यवहार गत करने की। हमारा व्यवहार प्रभावित होता है हमारे विचारों पर। यदि विचार ही शुद्ध, पवित्र हों तो समस्याएं अधिक समय तक टिकी नहीं रह सकती हैं। अतः समाधान हेतु शुद्ध विचारों को, मूल्यों को महत्त्व देना अति आवश्यक है। मूल्य कई हैं जिनमें एक महत्त्वपूर्ण है अहिंसा। अहिंसा का मूल्य प्राण देने वाला है, त्राण देने वाला है। अतः प्रकृति की सुरक्षा और संरक्षण के लिए अहिंसा अति आवश्यक है।

पर्यावरण : अर्थ एवं परिभाषाएं

प्रकृति में स्थित में सभी सजीव और निर्जीव वस्तुएं पर्यावरण का हिस्सा हैं। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है परि + आवरण। परि का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है घेरा, कवच आदि। अतः जीव जगत, वनस्पति जगत, जल, मृदा आदि इसके अंतर्गत आते हैं। पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम, 1986 की धारा 2 के अनुसार पर्यावरण में जल, वायु, भूमि, मानव, अन्य प्रजातियों, पौधों, सूक्ष्म जीवों व संपदा के मध्य अंतर्सम्बन्धों को सम्मिलित किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि पर्यावरण हमारे चारों ओर का एक वातावरण है जो प्राणी को जीवित रखने के लिए आवश्यक है।

एन.के. चक्रवर्ती के अनुसार, "पर्यावरण से तात्पर्य किसी भी व्यक्ति के चारों ओर सजीव और निर्जीव तत्वों से घिरा हो किन्तु इसमें निर्मित वातावरण सम्मिलित नहीं है।"

हेलन तथा डेविड ब्रफी 1989 के अनुसार, "पर्यावरण उन सभी वस्तुओं का सम्मिलित योग है जो सजीव और निर्जीव दोनों को प्रभावित करती हैं।"

भूगोल पर्यावरण कोश के अनुसार, "चारों ओर की उन बाहरी दशाओं का संपूर्ण योग जिसके भीतर एक जीव अथवा समुदाय रहता है या कोई वस्तु उपस्थित रहती है, पर्यावरण कहलाता है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि जो मानव के चारों ओर का वलय जो सजीव एवं निर्जीव दोनों रूपों में ही होता है।

पर्यावरण के प्रकार

विद्वानों ने पर्यावरण को अनेक भागों में बांटा है जिनमें मुख्य हैं–

1. **भौतिक पर्यावरण**– इसके अंतर्गत भौगोलिक स्थितियां, जलवायु संबंधी एवं नियंत्रित भौगोलिक वातावरण सम्मिलित हैं। भौगोलिक स्थिति में कहीं पठार हैं, कहीं पहाड़ हैं तो कहीं मैदानी और रेगिस्तानी इलाके हैं। जलवायु के अंतर्गत शीत, उष्ण, सम, शीतोष्ण आदि हैं। भौगोलिक वातावरण की शक्तियों के अंतर्गत पृथ्वी द्वारा अनेक क्रियाएं संपादित होती हैं जिसके अंतर्गत